24

2022-2023

23rd International Interdisciplinary Conference

२३ वी आंतरराष्ट्रीय आंतरविद्याशाखीय परिषद, पुणे

'The Contribution and Achievements of Men in Various Spheres at National and International Levels'

'देश आणि विदेशातील विविध क्षेत्रातील पुरुष कर्तृत्वाचे योगदान'

Editors

Lyudmila Sekacheva | Dr. Vitthal Shivankar | Dr. Snehal Tawre

Dr. L. D. Kadam | Dr. Shivling Menkudale | Dr. Sanjay Nagarkar

24

तेविसावी
आंतरराष्ट्रीय आंतरविद्याशाखीय परिषद, पुणे

देश आणि विदेशातील विविध क्षेत्रातील
पुरुष कर्तृत्वाचे योगदान
The Contribution and Achievements of Men in Various Spheres at National and International Levels

संपादक

• लुदमिला सेकाचेव्हा • डॉ. विठ्ठल शिवणकर • डॉ. स्नेहल तावरे
• डॉ. एल.डी. कदम • डॉ. शिवलिंग मेनकुदळे • डॉ. संजय नगरकर

Lt. Dr. Ravindra C. Patil
5 MAH BN NCC
R.C Shahu College Kolhapur

स्नेहवर्धन प्रकाशन
पुणे

Lt. Dr. Ravindra C. Patil
5 MAH BN NCC
R.C Shahu College Kolhapur

अनुक्रमणिका

- पुरुष कर्तृत्वाच्या निमित्ताने... – संपादक / ७

१. भारतीय हरितक्रांतीचे शिल्पकार डॉ.एम.एस.स्वामिनाथन — प्रा. डॉ. सुप्रिया खोले / ९

२. पत्रकार आणि साहित्यिक उत्तम कांबळे — प्रा. डॉ.सिंधू आवळे / १३

३. डॉ.सिग्मंड फ्रॉईड यांचे मानसशास्त्रातील मनोविश्लेषणाबाबत योगदान — प्रा. मिलिंद पाटील / १७

४. शाहू महाराज आणि महिला सक्षमीकरण — प्रा. एम. के. कन्नाडे / २१

५. समाज सुधारक – हमीद दलवाई सामाजिक सुधारणेतील योगदान — प्रा. एस. पी. मुलाणी / २६

६. राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य – राजनीतिक चेतना — लेफ्टनंट डॉ. रवींद्र पाटील / ३०

7. The Impact and Contribution of Peter Drucker on Management Theory — **Dr. Sampada Lavekar / 35**

8. Olympian Wrestler Khashaba Jadhav — **Dr. Vikramsinh Nangare / 39**

9. Contribution of Alexander Von Humboldt to the development of Modern Geography — **Dr. B. B. Ghurake / 43**

10. Dmitri Mendeleev- The King of Periodic Table — **Dr. Kishor Gaikwad / 47**

11. Contribution and Achievement of Friedrich Ratzel for the Development of Modern Human Geography — **Dr. M. D. Kadam / 51**

राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य – राजनीतिक चेतना

– लेफ्टनंट डॉ. रवींद्र पाटील

प्राचीन काल से राजनीति समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। समाज के निर्माण तथा व्यक्ति के उत्थान-पतन में राजनीति का विशिष्ट योगदान होता है। विश्व की घटनाएँ जहाँ एक ओर सामान्य जन-जीवन के दर्शन को प्रभावित करती है, वहीं साहित्यकार के जीवन को और भी प्रभावित करती है। साहित्यकार उन महान घटनाओं से प्रेरणा लेकर युग साहित्य का निर्माण करता है।

देश की राजनीतिक घटनाओं से संबंध–

राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में देश की राजनीतिक घटनाओं से संबंधित घटनाओं का चित्रणप्रचुर मात्रा में हुआ है। लेखक ने भूतकाल में घटित राजनीतिक घटनाओं का आधार लेकर कथा साहित्य को सजीव रूप प्रदान किया है। इसके लिए लेखक ने अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को साधन के रूप में इस्तेमाल किया है ।

'सिंह सेनापति' उपन्यास में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लिच्छावियों का पूर्वी भारत में एक शक्तिशाली राज्य होने की बात देश की राजनीतिक घटनाओं से संबंधित है। इसके संदर्भ में डॉ. प्रभाशंकर मिश्र लिखते है। ''छठी शताब्दी ई. पूर्व में अजातशत्रु द्वारा लिच्छवियों को पराजित करने की बात देश की राजनीतिक घटना से संबंधित है। बिंबसार और अजातशत्रु ऐतिहासिक पात्र हैं। पुराणों के अनुसार सम्राट बिंबसार ने अट्ठाईस वर्षो तक अपने राज्य की सीमाओं को बढ़ाया था। सन ४६४ ई. पूर्व में बिंबसार के बाद उसका पुत्र आजतशत्रु सिंहासनारुढ़ हुआ और उन्होंने लगभग २७ वर्षं तक शासन किया।''[७] यहाँ लेखक ने भूतकाल में घटित देश की राजनीतिक घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है। बिंबसार के पुत्र अजातशुत्र के लिच्छावियों से संबंध अच्छे नहीं थे। परिणामस्वरूप अजातशत्रु लिच्छावियों से युद्ध कर उन्हें समाप्त कर देता है। पाँचवी-छठी शताब्दी ई पू. पार्श्वो और गांधारों के मध्य हुए संघर्ष की घटना भी देश की राजनीतिक घटना से संबंध रखती है ।

'जय यौधेय' उपन्यास में सन ३५०-४०० ई. (गुप्त सं. ३०-८०) देश की राजनीतिक घटनाओं से संबंधित बातों का चित्रण हुआ है। चंद्रगुप्त के सम्राट बनने

तथा उसके राज्यविस्तार की घटनाओं से है। पिता समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद रामगुप्त गद्दी पर बैठता है। शकराज का आक्रमण हो जाने पर रामगुप्त अपनी पत्नी को शकराज को देने के लिए तैयार हो जाता है। इस अपमान को न सहते हुए चंद्रगुप्त शकराज तथा कायर रामगुप्त का वध कर देता है। और स्वयं विक्रमादित्य की उपाधि प्राप्त कर सम्राट बनता है। यह घटना देश की राजनीतिक घटनाओं में से एक महत्वपूर्ण घटना है। देश की राजनीतिक घटनाओं से संबंध स्पष्ट है। इसके संबंध में कुछ ऐतिहासिक तथ्य भी प्राप्त हैं। द्वितीय शताब्दी के अंत में यौधयों ने कुषाणों के दाँत खट्टे किये और उनको अपने राज्य की सीमा से निकालकर सतलज के पार भगा दिया। समुद्रगुप्त अपने पिता चंद्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद सन ३३० ई. को सिंहासनारुढ़ होता है। वह अपने राज्य को विस्तृत करता है। चंद्रगुप्त द्वितीय सन ३८० के आस-पास अपने पिता समुद्रगुप्त के पश्चात शासक बना और उसने यौधेय और मालव को अपने राज्य में सम्मिलित किया। जो एक ऐतिहासिक तथ्य है ।

'दिवोदास' उपन्यास के प्रसंगों का संबंध देश की राजनीतिक घटनाओं से है। दिवोदास अपने पिता वध्वश्व की मृत्यु के बाद ११६५ ई. पू. तृत्सुजन का राजा बनता है। इस संदर्भ में राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं, ''आर्य जन अपने साथ अपनी नदियों के जन ताँबे के कलशों में लाए थे जो वही रक्खे हुए थे। सातों सिंधुओं के उसी जल से दिवोदास का अभिषेक हुआ। सुरियों ने बारी-बारी से इस विधि को समाप्त किया। दिवोदास को नया अंतर्वासक, नई द्रापि और नया उष्णीव पहनाया गया।''[८] यहाँ लेखक ने आर्यो में राजा बनने के बाद की जानेवाली अभिषेक विधि का चित्रण किया है, यहाँ सातों सिंधुओं के जल से अभिषेक करने के बाद नए कपडे पहनाए जाते हैं। राजा बनने के बाद दिवोदास सप्तसिंधुं (पंजाब) से पणियों को पराजित करता है। और बाद में किरातों के एक सौ पुरियों को ध्वंस कर उनके राजा शंबर को मार देता है।

दिवोदास की भूमिका में लेखक ने लिखा है कि उनका पूर्व-लिखित 'ऋग्वेदिक आर्य' की लंबी भूमिका है। इस ग्रंथ से तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का परिचय प्राप्त होता है ।

'जीने के लिए' में लेखक ने देश की राजनीतिक घटना से संबंधित अनेक प्रसंगों का चित्रण किया है। सितंबर १९१४ ई. में प्रथम विश्वयुद्ध में भारतीय सेना को इंग्लैंड भेजने की घटना का चित्रण किया है। जो देश की राजनीतिक घटना से संबंधित है। प्रस्तुत उपन्यास में देश की राजनीतिक घटनाओं से संबंधी आंदोलनों का चित्रण है। इसके संदर्भ में लिखते हैं, ''जालियाँवाला कांड और पंजाब के फौजी कानून के अत्याचार ने सारे भारत के शरीर में बिजली दौड़ा दी।

लडाई के वक्त अंग्रेजों ने कहा था, तलवार के शासन को हटाकर न्याय का शासन स्थापित करने तथा सभी जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार देने के लिए हम लड़ाई लड़ रहे हैं। लॉर्ड हार्डिज के शब्दों में युद्ध के लिए भारत के खून को दुह कर उसे सफेद कर दिया गया। लाखों आदमियों ने बहादुरी के साथ अंग्रेजों के लिए अपनी जानें दी लेकिन इन सभी सेवाओं को पारितोषिक मिला रौलेट-ऐक्ट, जालियाँवाला कांड, फौजी कानून।''[९]

यहाँ लेखक ने पंजाब के जालियाँवाला बाग में हुए हत्याकांड का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। इसके माध्यम से लेखक ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनता पर किए गए अन्याय एवं अत्याचार का पर्दाफाश किया है। इस उपन्यास में रौलेट ॲक्ट, जालियावाला बाग हत्याकांड, असहकार आंदोलन आदि देश की राजनीति घटनाओं का संदर्भ लिया है ।

राहुल सांकृत्यायन ने अपनी कहानियों की रचना में देश की राजनीतिक घटनाओं से संबंधित घटनाओं का आधार लिया है। 'सुपर्ण यौधेय' (४२० ई.) में गुप्त राज्य को दासवृत्ति विवरण का कारण समझता है। इसके एक प्रसंग का चित्रण करते हुए लिखते है, ''मैंने सुन रखा था कि जब मेरे दादा गाँव में आये उसी वक्त उन्होंने सोना को चालीस रौप्य मुद्रा (रुपये) में किसी दक्खिनी व्यापारी से खरीदा था । उस वक्त दक्खिन से दास-दासियों को बेचने के लिए कितने ही व्यापारी आया करते थे ।''[१०] यहाँ लेखक ने समाज में स्थित ऊँच-नीचता की ओर संकेत किया है। समाज में स्थित धनी वर्ग जिस प्रकार गरीब तथा अर्थाभाव से पीड़ित लोगों का शोषण करते हैं इसकी ओर संकेत किया है। 'चक्रपाणि' (१२०० ई.) में कनौज सम्राट जयचंद और पृथ्वीराज में स्थित वैमनस्य को चित्रित किया है। जो देश की राजनीतिक घटना में संबंध रखती है।

'बाबा नूरदन' (१३०० ई.) अल्लाउद्दिन खिल्जी भारत वर्ष में अपने राज्य को स्थापित करने की बात को लेखक ने अपनी कहानियों में स्थान दिया है। इसके प्रसंग में लिखा है, ''वह समय खत्म हो गया, जब हम हिंद को दुधार गाय से बढ़कर नहीं समझते थे और किसानों, कारीगरों, बनियों और राजाओं से ज्यादा-से-ज्यादा धन जमाकर गोर भेजते या खुद मौज उड़ाते। अब हम गोर के गुलाम नहीं, हिंद के स्वतंत्र खल्जी शासक है।''[११] यहाँ लेखक ने भारत पर हुए इस्लामों के आक्रमण तथा साम्राज्य विस्तार आदि बात का चित्रण किया है । 'सुरैया' (१९०० ई.) में मुगल सम्राट अकबर के हिंदू मुस्लिमों में एकता स्थापित करने के लिए किए गए प्रयत्नों का चित्रण किया गया है। इसके परिणामस्वरूप अकबर ने टोडरमल के पुत्र कमल के परस्पर आंतरजातीय विवाह करवाने की बात ऐतिहासिक तथ्य के रूप में सामने आती है ।

'कनैला की कथा' में अपने जन्म ग्राम कनैला के इतिहासा को प्रस्तुत किया है। इस कहानी संग्रह की कहानियों का संबंध देश की राजनीतिक घटनाओं से है। 'नरमेध' में १३८८ ई. में फिरोज तुगलक के शासन के अंत के साथ दिल्ली की तुर्क सल्तनत बिखरने लगी। विशाल साम्राज्य के कई टुकडे.हो गये जिनमें उत्तरी भारत के बहुत बड़े भाग पर जौनपुर की सल्तनत भी थी। यहाँ तुगलक राज्यपाल के भाई इब्राहीम शर्की (१४००-३८ ई.) ने अपने को स्वतंत्र घोषित किया।''[१२] यहाँ लेखक ने भारत के इतिहास में बार-बार हुए राज्य परिवर्तन स्थिति की ओर संकेत किया है। कनैला की कथा सन १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम से संबंध जोड़ा है। इसके एक प्रसंग को कहानी में प्रस्तुत करते है, ''अंग्रेजों की नियत बहुत खराब हो गई है। वह हमारा धर्म लेना चाहते हैं। बंदूक के टोटे में उन्होंने गाय और सूअर की चर्बी डाल रख्खी है, जिसे बंदूक भरने के लिए दाँत से काटना पड़ता है।''[१३] इसके माध्यम से लेखक अंग्रेजों की दोहरी राजनीति का पर्दाफाश करने का सफल प्रयास किया है।

'स्वराज्य' कहानी में अंग्रेजों के जाने के बाद आज हथियार के कानून की इतनी कड़ाई से पाबंदी क्यों की जाती है? क्या सरकार और जनता के बीच अब भी पुरानी खाई मौजूद है? प्रशासन में भी खाई है, कहने का अर्थ यह कि अंग्रेजों ने जो नीतियाँ स्थापित की थी, देश उन्हीं पर चल रहा है जो 'विवेकहीनता' का परिचय देती हैं। कनैला की जर्जर आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थिति को इस कहानी में चित्रित किया गया है। अत: लेखक का प्रमुख उद्देश भूतकाल में देश के राजनीतिक घटनाओं को द्वारा पाठकों के सामने उजागर करना है। जिसका प्रभाव एवं परिणाम तत्कालीन समाज और राजनीति में किस प्रकार हुआ इसका चित्रण किया है ।

संदर्भ संकेत –

१) राहुल सांस्कृत्यायन दिवोदास, किनारा महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. १.
२) राहुल सांस्कृत्यायन सिंह सेनापती, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, भूमिका.
३) वही, जय यौधेय, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्राक्कथन.
४) वही, विस्मृत यात्री, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. १.
५) वही, मधुर स्वप्न, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्राक्कथन.
६) वही, बहुरंगी मधुपरी, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. १५.

७) डॉ. प्रभाशंकर मिश्र, राहुल सांस्कृत्यायन का कथा साहित्य, पृ. ५०.
८) राहुल सांस्कृत्यायन, दिवोदास, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. ४३.
९) वही जीने के लिए, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. १६२.
१०) वही, संपूर्ण यौधेय (वोल्गा से गंगा) किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. २३३.
११) वही, बाबा नूरदीन (वोल्गा से गंगा) किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. २७५.
१२) वही, नरमेध (कनैला की कथा) किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. १३.
१३) वही, स्वराज्य (कनैला की कथा) किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. ११३.

Lt. Dr. Ravindra C. Patil
5 MAH BN NCC
R.C Shahu College Kolhapur